बुधवार, 01 मार्च, 2023

युवा पीढ़ी को आजादी का अर्थ बताता थीम मंडप

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में हम आजादी के अपने ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात नायक और नायिकाओं का स्मरण करें, राष्ट्र के प्रति उनके अवदान को याद कर उन्हें श्रद्धा सुमन समर्पित करें, यह सहज स्वाभाविक है। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के इस 50वें स्वर्णिम वर्ष (न्यास द्वारा 1972 में विश्व पुस्तक मेलों की शुरुआत की गई) और विश्व पुस्तक मेले के 30वें संस्करण तथा कोविड-19 की समाप्ति के उपरांत भौतिक रूप से आयोजित इस पहले पुस्तक मेले की थीम 'आजादी का अमृत महोत्सव' रखा जाना बेहद प्रासंगिक और समयोचित ही है।

न्यास ने विश्व पुस्तक मेले की अपनी गौरवशाली परंपरा के अनुकूल पुस्तक मेले में बेहद भव्य स्वरूप में थीम मंडप का निर्माण किया है, जिसे कोई भी आगंतुक देखकर सहज ही रोमांचित हो उठता है। थीम मंडप का डिजाइन समय के साथ ज्ञान के निरंतर प्रवाह के प्रदर्शन-स्वरूप है, यदि ऐसा कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। इस मंडप के निर्माण के समय इसे इस तरह अनेक क्षेत्रों या खंड़ों में बाँटने की परिकल्पना की गई, ताकि आगंतुक भारत राष्ट्र की आजादी के समय से लेकर वर्तमान समय तक की उल्लेखनीय यात्रा को देख और महसूस कर सकें। थीम मंडप के सबसे सामने के प्रदर्शनी पटल (डिस्पले पैनल) पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की तसवीर एवं उनके एक कथन के साथ आजादी का अमृत महोत्सव@75 शब्द को अंकित किया गया है। अपने कथन में प्रधानमंत्री श्री मोदी 'आजादी का अमृत महोत्सव' का अर्थ समझाते हुए कहते हैं कि इसका अर्थ स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत, स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं की प्रेरणा का अमृत, नए विचारों और प्रतिज्ञाओं का अमृत और आत्म निर्भरता का अमृत है। इसलिए यह महोत्सव राष्ट्र जागरण का पर्व है।

थीम मंडप में सामने से प्रवेश करने पर सबसे पहले और सबसे अधिक प्रभावशाली और उल्लेखनीय हिस्सा मंडप के बायीं ओर निर्मित एक भव्य डिस्प्ले पैनल है, जिस पर बनारस के दिव्य घाट की पृष्ठभूमि में राष्ट्रगान 'जन गण मन' तथा राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम' उनके रचयिताओं, क्रमशः रवींद्रनाथ टैगोर तथा बंकिमचंद्र चटर्जी के सुंदर रेखाचित्र के साथ अंकित है तथा मध्य में आजादी के अर्ध 'चक्र' में बड़े ही कलात्मक ढंग से 75@ आजादी का अमृत महोत्सव राष्ट्रीय ध्वज के साथ समायोजित करते हुए अंकित किया गया है। इस खंड में काँच के एक जार में जो एक खुली और हस्तलिखित डायरी प्रदर्शित की गई है, उसके बारे में जानकर आगंतुक भौचक रह जाते हैं। दरअसल, वह क्रांतिकारी भगत सिंह की हस्तलिखित डायरी है। इस पटल पर वीर सावरकर, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस सहित कुल 12 राष्ट्रनेताओं एवं साहित्यकारों के प्रबोधक कथनों को उनकी अपनी-अपनी मूल भाषाओं में प्रदर्शित किया गया है। जैसे कि, सुभाष बोस का प्रसिद्ध कथन, 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा', हसरत मोहानी का 'इंकलाब जिंदाबाद' आदि। इस डिस्प्ले पैनल पर प्रमुखता के साथ खुली किताब की तसवीर पुस्तक मेले और आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्संबंध को प्रकट करती है। भगत सिंह की हथकड़ी बँधी मूर्ति किसी की भी आँखें नम कर सकती है।

थीम मंडप पर अलग-अलग अंतरालों पर छह पैनलों को इस तरह व्यवस्थित किया गया है कि ये मंडप की निर्माण-परिकल्पना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रतीत होते हैं। इन पैनलों पर दोनों तरफ, रैक में, थीम आधारित विभिन्न भाषाओं में विभिन्न प्रकाशकों की शताधिक पुस्तकों को प्रदर्शित किया गया है, जिनमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की भारत @75

पुस्तकमाला की लगभग 75 पुस्तकें भी शामिल हैं। आजादी के अपने नायकों को पुस्तकों के माध्यम से याद करने एवं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का इससे बढ़िया तरीका और क्या हो सकता है!

यह मंडप आधुनिक भारत की यात्रा को प्रस्तुत करने के लिए सन् 1857 के पूर्व से सन् 1947 के पश्चात की अवधि तक को दर्शाने का भी प्रयास है।

'भारत एक यात्रा' शीर्षक से, मंडप के दायीं ओर तीन डिस्प्ले पैनल के माध्यम से आजादी के नायकों एवं विभिन्न क्षेत्रों के महत्वपूर्ण व्यक्तियों की तसवीरें एवं उनसे संबंधित अन्य तसवीरें प्रदर्शित की गई हैं। एक पैनल 1857, दूसरा 1947 तथा तीसरा वर्तमान भारत को प्रदर्शित करता है।

मंडप के लगभग मध्य में काँच के एक जार में बड़ी ही प्रमुखता से 'भारत का संविधान' ग्रंथ को प्रदर्शित किया गया है। यह संविधान की पुस्तक हमें संवैधानिक मूल्यों के दायरे में रहकर कार्य करने की नसीहत देती-सी प्रतीत होती है। भारत का संविधान, भारत का गौरव ग्रंथ भी है। अंत में, थीम मंडप के मुख्य अग्र भाग के पृष्ठ भाग की दीवार पर फिल्म का पर्दा निर्मित किया गया है, जिस पर आजादी के अनेक प्रसंगों के वीडियो निरंतर चलते रहते हैं। जिज्ञासु और उत्सुक दर्शक-पाठक-आगंतुक पर्दे के सामने बैठकर अपनी थकावट भी दूर करते हैं और आजादी के अपने नायकों को 'लाइव' देखते भी हैं। यहाँ पैनल पर गांधी जी का एक बेहद प्रबोधक कथन अंकित है—हमारा जीवन खुली किताबों की तरह हो! थीम मंडप पर एक मंच भी निर्मित है, जिस पर दिनभर थीम आधारित विषयों पर चर्चा, विमर्श, संवाद, परिसंवाद आदि आयोजित होते रहते हैं। स्वतंत्रता संग्राम के आदिवासी महानायकों को भी यहाँ याद किया गया है तथा भारत में नालंदा, तक्षशिला, सदृश प्रतिनिधिक शिक्षण स्थलों का स्मरण भी यहाँ परिलक्षित होता है।

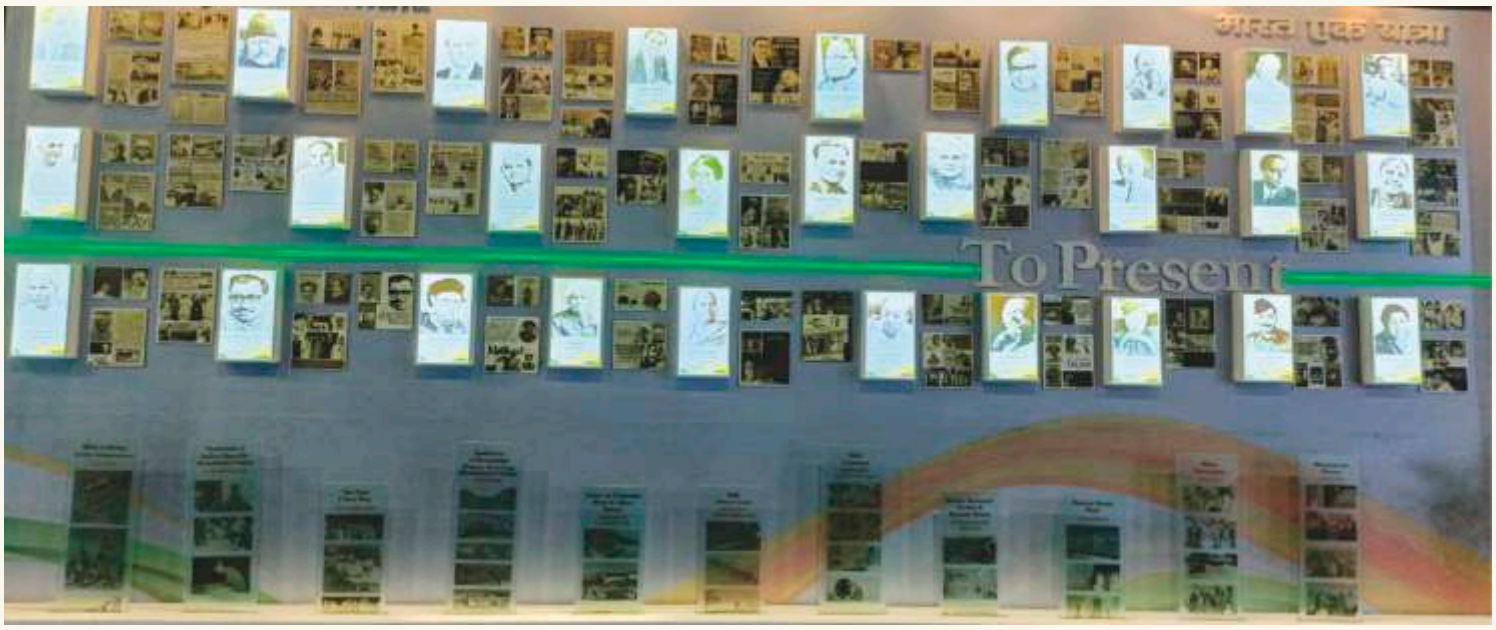

एक खंड भित्ति पर उन कुछ अग्रणी लेखकों/कवियों की भूमिका पर भी प्रकाश डालती है, जो देश की आजादी के नायक भी थे। दरअसल, भारत के स्वतंत्रता संघर्ष की कहानी में राष्ट्रवादी विचारों के विकास का क्रम भी समांतर चला है और इन्हें ही इस खंड में प्रदर्शित किया गया है। इस खंड का शीर्षक है—विचार, जिन्होंने राष्ट्रीय संस्कृति को गढ़ा। इस खंड में, प्रेमचंद, टैगोर, भगत सिंह, सुभद्रा कुमारी चौहान, वीर सावरकर आदि शामिल हैं।

एक खंड भित्तिचित्रों के माध्यम से उन पुस्तकों को दर्शाने हेतु है, जिन पर ब्रिटिश राज ने प्रतिबंध लगा दिया था। प्रतिबंधित दस्तावेजों का प्रतिनिधित्व करता यह खंड आज की नई युवा पीढ़ी के लिए बेहद जानकारीपरक है और वह यह जान सकेगी कि ब्रिटिश सरकार किस कदर राष्ट्रवादी विचारों से डरी हुई थी। इस खंड का शीर्षक है—आजादी के स्वर।

कुल मिलाकर, थीम मंडप आजादी के अमृत महोत्सव को विभिन्न आयामों के माध्यम से देखने-जानने-समझने तथा 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' को प्रदर्शित करने का एक उम्दा उपक्रम के समान है।

–दीपक कुमार गुप्ता

पुस्तकें मित्र, मार्गदर्शक और दार्शनिक होती हैं : राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर

बिहार के माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने पुस्तक महाकुंभ का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने इस आयोजन की विशेषताओं और केंद्रीय विषय 'आजादी का अमृत उत्सव' की जानकारी ली। इस अवसर पर किताबवाले प्रकाशन के स्टॉल पर कपिल कुमार की पुस्तक 'नेताजी, आजाद हिंद सरकार और फौज : भ्रांतियों से यथार्थ की ओर' के विमोचन कार्यक्रम में वे शामिल हुए, जहाँ पहले से मौजूद लोकसभा सांसद और पूर्व सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद ने उनका स्वागत किया। विमोचन कार्यक्रम में श्री आर्लेकर ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि न्यास के इस आयोजन में मुझे पधारने का अवसर मिला और यहाँ सर्वविभूतियों से मिलने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। मेरा मानना है कि किसी व्यक्ति को पुस्तक पढ़ने के लिए प्रेरित करने से पहले मुझे स्वयं पुस्तक पढ़नी चाहिए। विमोचित पुस्तक के संबंध में उन्होंने कहा कि इतिहास बदल रहा है। हमें लेखन के जरिए हमारी शिक्षा और ज्ञान परंपरा को ईमानदारी से लिखने की आवश्यकता है। इस अवसर पर श्री प्रसाद ने कहा कि भारत को जोड़ने का महती कार्य सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया था। पुस्तक के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मोइरांग की कहानी देश को बताई जानी चाहिए। लेखक ने पुस्तक में आनंद मोहन सहाय के योगदान पर बात की है, इसे नई पीढ़ी को बताया जाना चाहिए। यह दुखद है कि देश के वीरों को यथोचित सम्मान नहीं दिया गया है। इससे पूर्व श्री आर्लेकर ने राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा और न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक के साथ लगभग एक घंटे तक मेले का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने थीम पवेलियन, इंटरनेशनल इवेंट कॉर्नर, लेखक मंच, नई शिक्षा नीति पवेलियन, संविधान प्रदर्शनी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के स्टॉल का अवलोकन किया और इस महत्वपूर्ण आयोजन के लिए न्यास के प्रयासों को सराहा और सफल आयोजन की शुभकामनाएँ दीं।

महेंद्र लाल सरकार वैज्ञानिक चेतना के प्रसारक थे : डॉ. सुभाष सरकार

'18वीं-19वीं शताब्दी में कितने ही लोगों ने आजादी के लिए संघर्ष किया, इसकी जानकारी हमें पुस्तकों से मिलती है। ऐसे में एक चिकित्सक, समाज सुधारक और वैज्ञानिक चेतना के प्रसारक पर प्रकाशित पुस्तक 'महेंद्र लाल सरकार' हमें उनके

संघर्षमय जीवन के बारे में बताती है।' उक्त उद्‌गार शिक्षा राज्य मंत्री डॉ. सुभाष सरकार ने 'महेंद्र लाल सरकार' पुस्तक के विमोचन सत्र में व्यक्त किए। उन्होंने बताया कि श्री महेंद्र ने 'इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टिवेशन ऑफ साइंस' की स्थापना की। वे एक चिकित्सक होने के साथ-साथ क्रांतिकारी विचार रखने वाले व्यक्ति थे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत के अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा ने कहा कि हम देश के स्वतंत्रता सेनानियों और आजादी को याद करते हुए 'आजादी का अमृत उत्सव' मना रहे हैं। यह सुखद है कि पुस्तकों के इस महाकुंभ में दुनिया के प्रकाशक अपनी पुस्तकों के साथ यहाँ एकत्रित होते हैं। मेले के दौरान हजारों पुस्तकों का विमोचन होता है। इससे पूर्व मंत्री महोदय ने न्यास-अध्यक्ष प्रो. गोविंद प्रसाद शर्मा और न्यास-निदेशक श्री युवराज मलिक के साथ मेले का भ्रमण भी किया। मेले में स्थापित सभी मंडपों का अवलोकन करते हुए न्यास के प्रयासों की सराहना की। विशेष तौर पर थीम मंडप में भगत सिंह की जेल डायरी को देखकर अभिभूत हुए और उसे पढ़ा भी। भ्रमण के दौरान कई प्रकाशन संस्थानों के स्टॉल्स पर उन्हें सम्मान के तौर पर पुस्तकें भेंट की गईं।

बाल मंडप

बच्चों ने सुनी कहानियाँ

बच्चों के बीच कहानी कहने के लिए प्रसिद्ध सुश्री ऊषा छाबड़ा ने अपनी कहानी और अभिनय से बच्चों का मन मोह लिया। 'प्रथम बुक्स' द्वारा आयोजित इस सत्र में सुश्री छाबड़ा ने प्रथम बुक्स द्वारा प्रकाशित पुस्तकों से दो कहानियों, 'कौए के रिश्तेदार', और 'लाडले का ढोल' को सुनाया। कार्यक्रम में 'मानवस्थली, राजेंद्र नगर', 'एयरफोर्स विद्यालय, सुब्रोतो पार्क', और लवली पब्लिक स्कूल, ईस्ट दिल्ली के बच्चे सहभागी रहे।

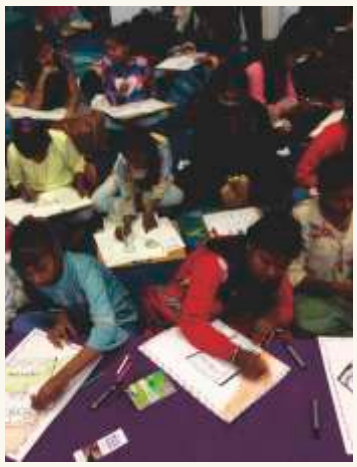

चित्रकला कार्यशाला

बच्चों की चित्रकला कार्यशाला आयोजित की गई। बच्चों को इन विषयों पर चित्र बनाने को कहा गया—

1. पुस्तक मेला
2. प्रकृति की खूबसूरती
3. पुस्तक पढ़ते हुए
4. कोई त्यौहार कार्यक्रम।

बच्चों को 'भारतीय संग्रहालयों में चित्रकला' (नेशनल मोन्यूमेंट्स ऑफ इंडिया) विषय पर घर से ई-मेल से प्रविष्टियाँ प्रेषित करने को भी कहा गया जिसके लिए पुरस्कार व प्रमाण-पत्र की व्यवस्था है। ई-मेल इस प्रकार है— cssw.sukhdev@gmail.com

कहानी कला कार्यशाला

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा बच्चों के लिए कहानी कला कार्यशाला आयोजित की गई। सुश्री अम्बालिका भट्ट ने कहा कि "लोक कथाएँ हमारे जीवन का महत्वपूर्ण भाग हैं और इनकी खासियत यह है कि इनमें पेड़-पौधे भी बोल सकते हैं, मछलियाँ उड़ सकती हैं, मगरमच्छ नाच सकते हैं। यहाँ सब-कुछ हो सकता है, पर अब हमारी लोक कथाएँ विलुप्त होती जा रही हैं।" बच्चों ने बड़े उत्साह से उन्हें सुना और फिर अपनी-अपनी कहानियों पर चित्र बनाए।

लेखक से चर्चा

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'रेजांगला की शौर्य गाथा' के लेखक पूर्व नौसेना अधिकारी कुलप्रीत यादव ने अपने अनुभव श्रोताओं के साथ साझा किए। उन्होंने 120 भारतीय सैनिकों की कहानी बताई जिन्होंने 1962 के भारत-चीन युद्ध में 5,000 मजबूत चीनी सैन्य सैनिकों के खिलाफ एक बहादुर लड़ाई लड़ी, जिससे पूरे लद्दाख क्षेत्र पर एक संभावित कब्जा हो गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

सातवीं डोगरा रेजिमेंट के कलाकारों ने प्रगति मैदान में आए पुस्तक प्रेमियों को हिंदी फिल्मों के लोकप्रिय गानों के साथ-साथ विभिन्न अंचलों के लोकगीत भी सुनाए। केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना प्रसारण मंत्रालय के कलाकारों ने राजस्थान के लोकगीत में मगरे पर बोलने वाले कौए से मेहमान के आने के भाव को प्रकट किया। इसके अलावा, बांसुरी वादन भी प्रस्तुत किया गया। मिरांडा हाउस कॉलेज की 'लक्षित' यूनिट की दिव्यांग छात्राओं ने गीत और नृत्य की प्रस्तुति दी।

साहित्यिक गतिविधियाँ

डॉ. आर.डी. मोहन की पुस्तक 'द स्टोरी ऑफ ए लिटिल बॉय' के विमोचन में एयर मार्शल ए.एस. भोंसले (यूपीएससी के पूर्व सदस्य), विंग कमांडर श्री कक्कड़ (वरिष्ठ अधिवक्ता), एयर कमांडर श्री मित्तल, डॉ. शिल्पा शर्मा (बाल चिकित्सा सर्जन), ब्रिगेडियर श्री सूद, कर्नल विनोद, डॉ. दिवाकर और श्री लक्ष्मण उपस्थित थे। ग्रुप कमांडर आर.डी. मोहन (सेवानिवृत्त) को प्यार से 'गुरु जी' कहा जाता है, क्योंकि वे कल्पवृक्ष गुरु के संस्थापक और प्रबंध निदेशक हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा युवा स्टार्टअप को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार की ओर से चलाई गई योजना 'आईस्टार्ट' पर सत्र का आयोजन किया गया। वक्ता भुवन सिंघल ने कहा कि आईस्टार्ट योजना सरकार की एक प्रमुख पहल है, जिसका उद्देश्य युवाओं और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करना है। इसके लिए राजस्थान सरकार उन्हें अनुदान भी प्रदान करेगी। श्री सिंघल ने इस योजना की कई विशेषताओं पर बात करते हुए पंजीकरण प्रक्रिया को भी समझाया।

'हिंदी भी एक ग्लोबल भाषा बन सकती है'—ऑस्कर पुजोल : अंतरराष्ट्रीय मंडप में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की ओर से स्पेन के ऑस्कर पुजोल एवं कुमार विक्रम के मध्य एक वार्ता का आयोजन किया गया। ऑस्कर पुजोल ने बताया कि अंग्रेजी में अनूदित भगवद्गीता के एक श्लोक से प्रेरित होकर उन्होंने संस्कृत और हिंदी भाषा सीखी। हिंदी और स्पेनिश की समानता बताते हुए ऑस्कर ने बताया कि हिंदी में जो लिखा जाता है, वही पढ़ा जाता है, ठीक वैसे ही स्पेनिश में भी। दर्शक द्वारा पूछे गए प्रश्न 'स्पेनिश भाषा के शब्दों का सही उच्चारण करने के लिए क्या करना चाहिए?' के उत्तर में उन्होंने कहा कि स्पेनिश संगीत सुनने के साथ फिल्म और सीरीज देखना चाहिए। वार्ता के बीच में ही पुजोल ने दर्शकों का स्पेनिश के कुछ व्यावहारिक शब्दों से परिचय कराते हुए स्पेनिश भाषा सीखने के लिए प्रेरित किया। अंत में ऑस्कर पुजोल ने दर्शकों से कहा कि उन्हें हिंदी भाषी होने पर गर्व करना चाहिए और अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेनिश आदि भाषाओं के जैसे ही हिंदी को भी ग्लोबल भाषा बनाने के लिए प्रयास करने चाहिए।

उद्भव सामाजिक एवं शैक्षिक संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा रचना पाठ' में कई दिग्गज कवियों और रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ सुनाईं। वहीं सुश्री आभा ने 'बची रहे आग' से युवाओं को प्रेरित किया तो मुख्य अतिथि श्री शैलेंद्र शैल ने रचना 'कैसे बच पाएगी मेरी कविता' से कोरोना काल के कष्ट का जिक्र किया। संचालक डॉ. विवेक गौतम भी इस रस में प्रचुर कवियों के सुर-में-सुर मिलाने से खुद को रोक नहीं पाए।

भाषा का विकास लिपि के संरक्षण से होगा : नागरी लिपि परिषद् द्वारा आयोजित विशेष आयोजन में कई पुस्तकों का लोकार्पण हुआ, जिसमें 'नागरी संगम' पत्रिका, अमेरिका से छपने वाली 'सौरभ' पत्रिका, प्रमिला कौशिक का काव्य संग्रह 'चाँद पर पहरा', 'रंगोली के रंग', भूप सिंह यादव की कृति 'आत्म संक्रांति', चिरंजी लाल की 'बाबा की गुड़िया' तथा अरुण पासवान का 'जुहू बीच' शामिल थीं। नागरी लिपि के महामंत्री हरी सिंह पाल ने कहा कि देवनागरी लिपि का संरक्षण करना आवश्यक है

अन्यथा हिंदी, भारतीय संस्कृति और संस्कार को नहीं बचाया जा सकेगा। मोतीलाल गुप्ता ने कहा नागरी लिपि को बच्चों को कंप्यूटर में सिखाना होगा। काव्य गोष्ठी में 25 कवियों ने अपनी कविताएँ सुनाईं जिनमें नागरी लिपि के विकास पर जोर दिया गया। मंच पर प्रेमचंद पतंजली (नागरी लिपि परिषद् के अध्यक्ष), श्री धरमवीर सिंह (भारतीय विदेश सेवा), श्री नारायण कुमार (नागरी लिपि के सदस्य), शिव शंकर अवस्थी (प्रोफेसर राजनीतिक विज्ञान) उपस्थित रहे।

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित बहुभाषीय लेखक सम्मेलन में देश के अनेक भाषाओं के कवि और कहानीकारों ने शिरकत की। उन्होंने हिंदी-उर्दू के अलावा सिंधी भाषा में अपनी कविता और कहानियाँ सुनाईं। मोहन हिमथानी ने वर्तमान में युवाओं में टच मोबाइल के स्नेह पर व्यंग्यपूर्ण कविता प्रस्तुत की, जिसमें रिश्तों की संवेदना को समझाने का प्रयास किया गया था। चंद्रभान ख्याल ने शेर पढ़ा—"ख्यालों फिक्र हूँ, शहर सुखन हूँ, मैं अपने आप में एक अंजुमन हूँ"। दूसरा शेर इस प्रकार था—"हम तो नाकर्दा गुनाहों की सजा कहते, जिंदगी तू भी बता दे, तुझे क्या कहते"। हिंदी कवि श्री प्रताप सिंह ने 'जब भी पत्ते हिलते, हवा का चेहरा पढ़ता हूँ' और 'सदियों बाद यह किसने चौसर फेंका, जीत गए फिर कौरव' तथा '2023 में कोरोना' आदि कविताओं का पाठ किया। अंत में कश्मीर से आए गौरीशंकर रैना ने एक कश्मीरी कहानी 'मध्यांतर' सुनाई। इस कहानी में जीवन की अल्पकालिता का वर्णन है और इसका मुख्य पात्र शिबन कृष्ण है जो जीवन के हर पल को जोशो-खरोश से जीना चाहता है। संचालन ज्योतिकृष्ण वर्मा ने किया।

नारी की यात्रा वैदिक से आधुनिक युग तक : अश्रोत्पोरव द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में चर्चित लेखिकाओं—डॉ. इला घोष, अनीता पांडे, डॉ. रमा, ज्योति शर्मा, सुश्री मीना प्रजापति, सांत्वना श्रीकांत आदि ने अपने ओजस्वी उद्गार व्यक्त किए। यहाँ स्त्री-संघर्ष से जुड़ी कई धारणाओं के बारे में चर्चा की। ऋग्वेद काल से नवजागरण काल तक, शोषित से आंदोलनकारियों तक हर काल की महिलाओं का जिक्र उस चर्चा में शामिल था।

तुर्की की पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद कार्यक्रम

हालाँकि तुर्की इन दिनों भूकंप की भीषण त्रासदी ने गुजर रहा है, इसके बावजूद वहाँ की सरकार के संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय ने दुनिया के सबसे बड़े पुस्तक मेला कहलाने वाले इस मेला में सहभागिता का निश्चय किया। भारत में तुर्की के संस्कृति-पर्यटन काउंसिलर श्री एच. डेनिस इरसोज ने बताया कि तुर्की सरकार लंबे समय से भारतीय भाषाओं में साहित्य के अनुवाद की योजना पर काम कर रही है।

इस समय भारत के 16 प्रकाशक 93 पुस्तकों को सात भाषाओं—बंगाली, हिंदी, अंग्रेजी, कन्नड़, मलयालम, मराठी और तमिल में अनूदित कर रहे हैं। इस समय वे दुनिया की 72 भाषाओं में कोई 3500 पुस्तकों के अनुवाद पर काम कर रहे हैं।

विदेशी मंडप में तुर्की के स्टॉल पर चार प्रकाशकों की सैंकड़ों पुस्तकें प्रदर्शित की गई हैं। यहाँ कई भारतीय भाषाओं में अनूदित पुस्तकें देखना सुखद लगता है। चूँकि तुर्की में प्राथमिक कक्षा में अंग्रेजी अनिवार्य है, इसलिए वहाँ स्कूली स्तर की अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकों का बहुत महत्व है। सुश्री कार्ग्ला अकीन, तुर्की के बहुप्रतिष्ठित पाठ्यपुस्तक प्रकाशन संस्थान 'कुरमेय' की संपादक हैं और वे भारत के लोगों की उनकी पुस्तकों में गहरी रुचि से बेहद प्रभावित हैं।

भारत में तुर्की साहित्य

तुर्की गणराज्य, संस्कृति और पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित इस विमर्श में फ़िरत सुनैल, भारत में तुर्की के राजदूत और लेखक नर्मिन मोलाग्ल और इस्तांबुल स्थित कलेम लिटरेचर एजेंसी के संस्थापक और प्रमुख शामिल हुए। अपने अनुभव साझा करते हुए श्री फिरत ने कहा, "भारत हमारा गृह-देश बनता जा रहा है।" उन्होंने श्रोताओं को बताया कि किस प्रकार उनकी पुस्तकों का मलयालम में अनुवाद किया जा रहा है और इस तरह के आदान-प्रदान से ही साहित्य समृद्ध होता है। श्री नर्मिन ने कहा इसका मुख्य कारण यह है कि हिंदी और तुर्की के बीच नौ हजार शब्द एक समान हैं। सत्र इस बात पर केंद्रित था कि साहित्य कैसे लोगों को जोड़ता है और उन्हें एक साथ लाता है।

विशेष आकर्षण

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

सभी पुस्तक प्रेमियों को आमंत्रित करता है

आएँ और विषयों की एक व्यापक श्रृंखला में से अपनी पसंदीदा पुस्तकों को चुनकर खरीदें।

हिंदी, अंग्रेजी तथा 55 प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपन्यास, कहानियाँ, नाटक, कविता, जीवनी, लोकोपयोगी विज्ञान, राजनीति, शासन, संस्कृति, भारतीय समाज, भारतीय राज्य, बाल पुस्तकों व नवसाक्षरों हेतु पुस्तकें।

एनबीटी स्टॉल

हॉल सं.: 2, स्टॉल सं.: 48–67; हॉल सं.: 3, स्टॉल सं.: 13–42;
हॉल सं.: 4 (प्रथम तल), स्टॉल सं.: 04–05;
हॉल सं.: 5, स्टॉल सं.: 34–63

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला
प्रगति मैदान, नई दिल्ली

25 फरवरी
05 मार्च
2023
प्रातः 11:00 बजे से
रात्रि 8:00 बजे तक

हमसे जुड़ें

आयोजक
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

सह–आयोजक

बुधवार, दिनांक 01 मार्च, 2023 को आयोजित होने वाले कार्यक्रम

समय	कार्यक्रम	आयोजक
	एनईपी पवेलियन : हॉल सं. 4 (प्रथम तल)	
11.30-12.15	वैकल्पिक ऊर्जा सत्र : आरईसी	रा.पु. न्यास
12.30-01.30	पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम	विज्ञान प्रसार
03.00-04.00	राष्ट्रीय एकीकरण के रूप में रूपांतरण	इग्नू
04.00-05.00	बच्चे के सर्वांगीण विकास में चिंतन की भूमिका	दिल्ली आश्रम
	इंटरनेशनल इवेंट/युवा कॉर्नर : हॉल सं. 4	
02.00-03.00	स्पेनिश भाषा और संस्कृति पर कार्यशाला	रा.पु. न्यास
03.00-04.00	ऑस्ट्रियन कल्चरल सेंटर द्वारा कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
04.00-05.00	डेटा और प्रकाशन उद्योग पर पैनल चर्चा	विश्व बौद्धिक संपदा संगठन
	थीम पवेलियन : हॉल सं. 5	
02:30-04:30	श्री उदय माहुरकर, सूचना आयुक्त के साथ प्राइम टाइम चर्चा	रा.पु. न्यास
04:30-06:00	'स्वतंत्रता आंदोलन में लेखकों का योगदान' पर चर्चा; *संयोजन* : अनुपम तिवारी; *सहभागी* : हरीश नवल, पद्मावती, करुणशंकर उपाध्याय	साहित्य अकादेमी
06:30-08:00	श्री शांतनु गुप्ता के साथ प्राइम टाइम चर्चा	रा.पु. न्यास
	सेमिनार हॉल : हॉल सं. 4	
11.30-01.00	'हिंदीतर साहित्यकारों का हिंदी साहित्य' पर चर्चा	केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
02.00-03.30	पुस्तक विमोचन कार्यक्रम	जिज्ञासा प्रकाशन ओपीसी प्रा.लि.
04.00-05.30	आध्यात्मिक पुस्तक : 'ईश्वर भक्ति और प्रेम' पर चर्चा	शिष्याश्रम चैरिटेबल ट्रस्ट
06.00-07.30	पुस्तक विमोचन कार्यक्रम	योगदा सत्संग सोसा. ऑफ इंडिया
	बाल मंडप : हॉल सं. 3	
11.00-11.45	कहानी वाचन सत्र; कहानीकार : डॉ. शिवानी कनोडिया	प्रथम बुक्स
11.50-12.30	अंतर्विद्यालयी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
01.40-02.10	अंतर्विद्यालयी वर्तनी प्रतियोगिता	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
02.15-03.00	'बेस्ट प्रेक्टिसेस इन चिल्ड्रेन'स लिटरेचर' के मुख्य पृष्ठ का अनावरण	राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, रा.पु. न्यास
03.15-04.00	'घर में पठन की प्रासंगिकता' पर चर्चा; *वक्ता* : प्रदीप कुमार	वर्ल्डरीडर
	ऑथर्स कॉर्नर : हॉल सं. 5	
11.30-12.30	कार्यक्रम	प्रकाशन विभाग
01.30-02.30	'व्हेन द म्यूज बाइट्स, इज पोएट्री अ लक्जरी' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : देविका दास, संजय चंद्र, देवेन्द्र गौतम, निशांत गंग, श्रुति चौधरी	माई सीक्रेट बुकशेल्फ
03.00-04.00	'नए युग में नवोदित लेखकों के लिए प्रकाशन में अवसर' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : शुभम कुमार शाह, इशानी अग्रवाल, डॉ. राघवन चौहान, डॉ. मीतू भाटिया कपूर, सुश्री तान्या सिंह	फ्लेयर एंड ग्लेयर्स
04.30-05.30	'महिला सशक्तीकरण' विषय पर चर्चा; *वक्ता* : पूनम कालरा, नम्रता चांडी, श्रिया पल्लवी	गुल्लीबाबा पब्लिशिंग हाउस
06.00-07.00	कार्यक्रम	रा.पु. न्यास
	लेखक मंच : हॉल सं. 2	
11.30-12.30	पुस्तक विमोचन 'निलंबित मौन स्वर'; *वक्ता* : शिवशक्ति बक्शी, चंद्रभूषण सिंह, राखी बक्शी, मनीश शुक्ला; *संचालन* : उमेश शर्मा	नेहा प्रकाशन
01.00-02.00	सिंधि पुस्तक पर चर्चा; *वक्ता* : डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदानी; *संचालन* : डॉ. रवि प्रकाश टेकचंदानी	नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ हिंदी लैंग्वेज
2:30-03:30	लेखक धवल पटेल की पुस्तक 'भारत के जनजातीय क्रांतिवीर' पर कार्यक्रम; *वक्ता* : गौरव	ब्लूवन इंक
04.00-05.00	'अक्षरों से आवाज तक'; *वक्ता* : दिव्य प्रकाश दुबे, सुप्रिया पुरोहित लेखक, संज्ञा टंडन, शुभ्रा ठाकुर, वॉइस ओवर आर्टिस्ट, सजीव सारथी, ऑडियो कम्युनिटी; *संचालन* : शैलेष भारतवासी	हिंद युग्म
05.30-06.30	लेखक से मुलाकात; पीयूष कुमार; *वक्ता* : मंजीत नेगी	प्रभात प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
07.00-08.00	भूले-बिसरे स्वतंत्रता सेनानी, आजादी की अमृत गाथा पर चर्चा; *वक्ता* : पार्थ सारथि थपलियल, जेपीयस जॉली, डॉ. रमेश कुमार योगाचार्य; *संचालन* : उदय कुमार मन्ना	राम जानकी संस्थान, आरजेएस
	सांस्कृतिक कार्यक्रम (एंफीथियेटर)	
06.00-07.00	गान एवं नृत्य	केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

पुस्तक मेला के बारे में सामान्य जानकारी

प्रगति मैदान : कहाँ पर क्या

मेले की अवधि	:	25 फरवरी -05 मार्च, 2023
समय	:	प्रातः 11 से सायं 8 बजे तक
स्थान	:	हॉल सं. 2 से 5

हॉल संख्या 5

थीम मंडप (आजादी का अमृत महोत्सव)
ऑथर्स कॉर्नर

हॉल संख्या 4

गेस्ट ऑफ ऑनर पवेलियन-फ्रांस
जी20 पवेलियन
बिजनेस लाउंज (व्यापार कक्ष)
इंटरनेशनल इवेंट्स कॉर्नर
सेमिनार हॉल

हॉल संख्या 4 (प्रथम तल)

नई शिक्षा नीति 2020 पवेलियन

हॉल संख्या 3

बाल मंडप

हॉल संख्या 3 (मेजानिन)

नई दिल्ली राइट्स टेबल

हॉल संख्या 2

लेखक मंच

पुस्तकें यहाँ उपलब्ध हैं

सामान्य एवं व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी	:	हॉल सं. 5 और 4 (प्रथम तल)
हिंदी एवं क्षेत्रीय भाषाएँ	:	हॉल सं. 2
बच्चों के लिए पुस्तकें	:	हॉल सं. 3

20 मेट्रो स्टेशन पर पुस्तक मेले के टिकट उपलब्ध

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला देखने आने वालों के लिए दिल्ली मेट्रो ने एक अच्छी सुविधा उपलब्ध कराई है, जिसके तहत राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के 20 मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक मेले के लिए प्रवेश के टिकट उपलब्ध होंगे। वैसे ये टिकट प्रगति मैदान पर भी लिए जा सकते हैं। प्रगति मैदान के **गेट सं. 4** और **10** पर टिकट उपलब्ध हैं। इसके अलावा वेबसाइट : www.itpoonlineticket.in से भी ऑनलाइन टिकट ले सकते हैं। **टिकट दर :** वयस्क– **20** रुपये, बच्चे– **10** रुपये। छात्रों, वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों के लिए प्रवेश निशुल्क है। जिन मेट्रो स्टेशनों पर टिकट उपलब्ध होंगे, वे इस प्रकार हैं–

1. रेड लाइन : रिठाला, दिलशाद गार्डन।

2. ब्लू लाइन : कीर्ति नगर, राजेन्द्र पैलेस, मंडी हाउस, सुप्रीम कोर्ट, वैशाली, नोएडा सेक्टर 18, नोएडा सेक्टर 52, नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी, इंद्रप्रस्थ।

3. येलो लाइन : हुड्डा सिटी सेंटर, हौज खास, विश्वविद्यालय, जीटीबी नगर, जहाँगीरपुरी, कश्मीरी गेट, राजीव चौक, आईएनए।

4. वॉयलेट लाइन : आईटीओ।

प्रवेश : गेट नं 4 (भैरों मार्ग) और गेट नं 10 (मेट्रो स्टेशन के पास)।
नोट : व्हील चेयर की सुविधा गेट नं 4 और 10 पर उपलब्ध है।

QR कोड स्कैन करके नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के टिकट ऑनलाइन खरीदे जा सकते हैं :

भाषावार प्रकाशक

• 1. हिंदी : 178 • 2. उर्दू : 19 • 3. संस्कृत : 3 • 4. मलयालम : 3 • 5. पंजाबी : 7 • 6. तमिल : 2
• 7. बांग्ला : 4 • 8. अंग्रेजी : 325 • 9. असमिया : 1 • 10. सिंधी : 2 • 11. गुजराती : 1 • 12. मैथिली : 2

हमसे यहाँ भी जुड़ें

https://www.twitter.com/nbt_india | https://www.facebook.com/nationalbooktrustindia | https://www.linkedin.com/company/nationalbooktrustindia
https://www.youtube.com/nbtindia | https://www.instagram.com/nbtindia | https://www.kooapp.com/profile/nbtindia
अधिक जानकारी के लिए **www.nbtindia.gov.in** पर जाएँ

मेला वार्ता के लिए विज्ञापन, समाचार, सूचना एवं सुझाव

इस ई-मेल पर भेजे जा सकते हैं– **melavartandwbf@gmail.com**
प्रकाशन हेतु सामग्री मेला वार्ता के **हॉल संख्या 4** के पास स्थित कार्यालय को भी दी जा सकती है।
विज्ञापन की दर इस प्रकार है : एक कॉलम, एक-चौथाई पेज–एक दिन के लिए रु. **3,000/-** ;
सभी अंकों के लिए मात्र रु. **25,000/-** विज्ञापन कम-से-कम एक दिन पहले भुगतान के साथ कार्यालय में पहुँच जाना चाहिए।

संपादक
पंकज चतुर्वेदी

संपादकीय सहयोग
विजय कुमार
कमलेश पाण्डेय
डॉ. अकरम हुसैन

उत्पादन
पवन दूबे

लेआउट एवं सज्जा
ऋतुराज शर्मा

टंकण
भानुप्रिया

संवाददाता
अर्चिता नयन
कंचन
कौशल

मेला वार्ता, भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा 30वें नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के लिए प्रकाशित विशेष बुलेटिन है। इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

श्री युवराज मलिक, *निदेशक*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-2, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित एवं मे. सालासर इमेजिंग सिस्टम्स, ए-97, सेक्टर-58, नोएडा-201301 द्वारा मुद्रित।